By:-
Dr. MAHESH KUMAR
SNSRKS College
(BNMU)

B.Com III
Paper VI
(Management A/c)

प्रबन्धकीय लेखाविधि क्या है? वर्तमान समय में इसके महत्व एवं आवश्यकता को बताइए।

Ans. प्रबन्ध लेखांकन दो शब्दों प्रबन्ध + लेखांकन से मिलकर बना है। वस्तुतः प्रबन्ध एक व्यापक शब्द है जो आधुनिक व्यावसायिक एवं औद्योगिक जगत में कई अर्थों में प्रयुक्त होता है। संकीर्ण अर्थ में "प्रबन्ध दूसरे व्यक्तियों से कार्य कराने की युक्ति है।" इसके अनुसार वह व्यक्ति जो दूसरे से कार्य कराता है प्रबन्धक कहलाता है। विस्तृत अर्थ में, प्रबन्ध एक कला एवं विज्ञान है, जो निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न मानवीय प्रयासों से संबंध रखता है।"

इस प्रकार प्रबंध लेखांकन से तात्पर्य ऐसी लेखा पद्धति से है जो प्रबन्धकीय कार्यकुशलता में वृद्धि कर सके। अतः प्रबन्धकीय कार्यकुशलता में वृद्धि करने के लिए लेखांकन की प्रयुक्ति का प्रयोग प्रबन्ध यन्त्र के रूप में किया जाता है तो उसे प्रबन्ध लेखांकन कहते हैं।

प्रबन्धकीय लेखा-विधि एक विज्ञान है। इसके द्वारा निकाले गये अधिकांश निष्कर्ष समंकों के बुद्धिमतापूर्ण निर्वचन पर निर्भर करते हैं और कुछ विशेष ही परिस्थितियों में ही पथ प्रदर्शक होते हैं। वित्तीय लेखाविधि में भी कुछ धारणायें समय की गति के साथ-साथ बन न गई हैं। प्रबन्धकीय लेखाविधि प्रबन्ध के लिए प्रबन्धकीय कार्य में लेखांकन सेवा है। इसके अन्तर्गत लेखा कार्यों का विश्लेषण करके इसे कुशलता से बढ़ाने के लिए उपयोगी बनाया जाता है। इस प्रकार साधारण बोलचाल की भाषा में, कोई भी लेखाविधि, जो प्रबन्ध के कार्यों में सहायता करने हेतु आवश्यक सूचना प्रदान करती है, प्रबन्धकीय लेखाविधि कहलाती है।

प्रबन्धकीय लेखाविधि की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्न हैं:—

~~रॉबर्ट~~ प्रो. रॉबर्ट एन. एन्थोनी के अनुसार,

Scanned with CamScanner

प्रबन्धकीय लेखाविधि का सम्बन्ध लेखा - सूचना से है जो किस प्रबन्ध के लिए उपयोगी होती है।"

Exam* प्रो० आर० सी० इवन्यू० एन० के शब्दों में, "लेखाविधि का कोई भी रूप, जो कि व्यवसाय को अधिक कुशलतापूर्वक संचालन योग्य बनाये, प्रबन्धकीय लेखाविधि कहा जाता है।"

* **आंग्ल - अमेरिकी उत्पादकता परिषद् के अनुसार,** "व्यावसायिक संस्था के दिन - प्रतिदिन के संचालन तथा नीति निर्धारण में प्रबन्ध की सहायता हेतु लेखा-सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण ही प्रबन्धकीय लेखाविधि है।"

* **प्रो० टी० जी० रोज के शब्दों में,** "प्रबन्धकीय लेखाविधि लेखा - सूचना का इस प्रकार अनुकूलन, विश्लेषण, निदान तथा व्याख्या है, जिससे प्रबन्ध को सहायता मिलती है।"

प्रबन्धकीय लेखाविधि का महत्व व आवश्यकता

(Need and Importance of management Accounting)

विज्ञान के विकास के साथ-साथ आधुनिक समय में औद्योगिक क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, जिनके फलस्वरूप प्रबन्धकीय क्रियाओं का सम्पादन पुराने रीति-रिवाजों से लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता है। प्रबन्धकीय प्रक्रियाओं में जटिलता के कारण सर्वोच्च प्रबन्ध के अधिकारों का अन्तरण आवश्यक हो गया है। वस्तुतः वर्तमान जटिल औद्योगिक परिवेश में प्रबन्धकीय लेखाविधि प्रबन्ध का अभिन्न अंग बन गयी है। प्रबन्धकीय लेखाविधि से न केवल प्रबन्ध की कार्यक्षमता बढ़ती है

Scanned with CamScanner

v) ग्राहकों की सेवा (service to the customers) :-

प्रबन्धकीय लेखाविधि के विभिन्न कार्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह लागत को कम करने के लिए हर सम्भव प्रयास करती है, यह केवल कीमत को कम नहीं करती, बल्कि वस्तुओं की क्वालिटी को भी बढ़ाती है।

vi) संगठन (organisation) :-

संगठन एक ऐसी व्यवस्था है जिससे किसी संस्था में विभिन्न पदों एवं विभागों में कार्यरत कर्मचारियों का उत्तरदायित्व निश्चित किया जाता है तथा उनकी अधिकार-रेखाएँ स्पष्ट की जाती हैं। इसके अलावा वे अपने अधीनस्थ कार्यरत कर्मचारियों की भी कार्यकुशलता के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं। क्योंकि प्रबन्ध लेखांकन में बजट नियन्त्रण प्रणाली एवं लागत केन्द्रों की स्थापना से तथा उत्तरदायित्व के निर्धारण एवं लागतों के नियन्त्रण पर अत्यधिक मात्रा में आग्रह होने से श्रेष्ठ संगठन व्यवस्था का निर्माण सम्भव हो सकता है।

vii) नियुक्तियाँ (Staffing) :- नियुक्ति का तात्पर्य किसी संगठन व्यवस्था में विभाजित पदों पर व्यक्तियों को कार्य-भार सौंपने से है। उनके द्वारा किये गये कार्य का मूल्य उनकी नियुक्ति के मूल्य से अधिक होना चाहिए। अतः लागत-लाभ तुलना कर प्रबन्ध लेखापाल प्रबन्धकों की नियुक्तियों में सहायता करता है।

viii) निर्देशन (Direction) :-

निर्देशन का तात्पर्य अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से अधिकतम कार्यकुशलता के साथ कार्य करने के लिए उन्हें मार्गदर्शन करने से है। निर्देशन के लिए पर्यवेक्षण, नेतृत्व, सम्प्रेषण तथा प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

है, बल्कि कर्मचारियों की कार्यक्षमता भी विकसित होती है। इसके महत्व व आवश्यकता निम्न हैं:—

i) कार्यक्षमता में वृद्धि (Increase in Efficiency):- प्रबन्धकीय लेखाविधि संस्था की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। चूँकि पूर्वानुमान के आधार पर प्रत्येक विभाग का टारगेट तैयार कर लिया जाता है। वर्तमान युग योजना का युग है। वहीं उत्पादक अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पाता है जो योजनाबद्ध ढंग से उत्पादन करता है। प्रबन्धकीय लेखांकन व्यवसाय के समस्त भूतकालिक आँकड़ों को प्रस्तुत करता है जिनके आधार पर प्रबन्ध वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में भावी योजनाओं का निर्माण करता है।

ii) उचित नियोजन (Proper planning):- लेखांकन सूचना के आधार पर प्रबन्ध अनेक नियोजन करता है। चूँकि सबसे पहले बजट विभागीय स्तर पर बनाया जाता है जो सम्पूर्ण संगठन के लिए होता है। संस्थाओं की क्रियाओं का नियोजन वैज्ञानिक तौर-तरीके से किया जाता है।

iii) निष्पादन का प्रबन्ध (Management of Performance):- बजटरी नियन्त्रण एवं प्रमाप परिव्ययन ऐसी तकनीकें हैं जिनकी सहायता से कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन किया जाता है। प्रमाप परिव्ययन के अन्तर्गत पहले प्रमाप निर्धारित कर दिये जाते हैं और तब वास्तविक लागत से उनकी तुलना की जाती है।

iv) लाभ को अधिकतम करना (Maximising profit):- विभिन्न लागत नियन्त्रण के लिए प्रयुक्त कदम उत्पादन लागत को घटाते हैं। प्रबन्धकीय लेखाविधि की सहायता से उद्योग के लाभ को अधिकतम करना सम्भव हो पाता है, अर्थात् इसमें इसकी अपेक्षित भूमिका रहती है।

Scanned with CamScanner